नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक : ..... दिनांक : 20.08.2019

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप पी0जी0 कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में **'युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 50वीं एवं राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की 05 वीं पुण्यतिथि** के पावन स्मृति में आयोजित सप्त दिवसीय व्याख्यान माला के पाँचवे दिन **बी0एच0यू0 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान** के प्रोफेसर **डॉ0 बी0 रामानाथन** ने **''प्राचीन भारत में वैज्ञानिक उपलब्धियाँ''** विषय पर बोलते हुए कहा कि **प्राचीन भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियॉ विस्मयकारी हैं।** प्राचीन भारत के ग्रंथ मन में कौतुहल पैदा करते है कि हजारों वर्ष पूर्व भारत की ऋषि परम्परा ने कैसे विज्ञान के गूढ़ रहस्यों को जानकर उसका उपयोग समाज जीवन में किया था। हमारे पूर्वजों ने प्राचीन काल में ही सब कुछ खोज लिया था। यदि प्राचीन ग्रंथों की भलिभांति व्याख्या की जाय आधुनिक विज्ञान के सभी अविष्कार उसमें दिखाई देते है। प्राचीन ग्रंथों वेद, पुराण, उपनिषद , रामायण, महाभारत सहित सभी मूल्यवान ग्रंथ वैज्ञानिक उपलब्धियों से भरे पड़े है। रडार प्रणाली ,गौमूत्र को सोने में बदलने की तकनीकि, मिसाईल तकनीकि, सापेक्षता का सिद्धान्त, क्वांटम सिद्धान्त विमानो की प्रयोग, दूरस्त स्थानो पर देखने की तकनीकि, संजीवनी औषधि सहित भांति–भांति प्रकार के यन्त्रों और उपकरणों की भरमार है। **प्रत्येक हिन्दुस्तानी को अपने पूर्वजों के उच्च कोटि के प्रौद्योगिकी पर बेहद गर्व है।** प्राचीन भारत के ग्रंथों से वैज्ञानिक उपलब्धियाँ अपने गौरवपूर्व स्वर्णिम इतिहास के माध्यम से आगे आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन होता रहेगा। हमारे पूर्वजो की दृष्टि सम्पन्न वैज्ञानिक दृष्टि थी। आज आवश्यकता है कि ऐसे गौरवपूर्ण धरोहरों की सुरक्षा, संरक्षा की जिम्मेदारी समाज और सरकार सम्भालें।

उन्होंने आगे कहा कि प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक उपलब्धियों में भारतीय गणित का आधुनिक विज्ञान के लिए सबसे बड़ा योगदान है। दुनिया में सर्वप्रथम शून्य की खोज प्राचीन भारत के वैज्ञानिको को जाती है। आज सम्पूर्ण विश्व इसी अंक पद्धति का उपयोग करते हुए गणित के सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान करता है। भारत से ही होकर यह अंक पद्धति अरबो के माध्यम से यूरोप तक पहुँची है और आज यह अन्तर्राष्ट्रीय अंक पद्धति के रूप में विश्व में स्थापित है। इसका सम्पूर्ण श्रेय भारत के ऋषि तुल्य वैज्ञानिक एवं गणितज्ञ आर्यभट्ट और उसके बाद ब्रह्मगुप्त को जाता है। आर्यभट्टीय संख्या दशमल पद्धति को उद्घटित एवं विस्तारित किया है। पाई के मान को छन्दबद्ध करने का श्रेय भी प्राचीन भारतीय वैज्ञानिको को जाता है। प्राचीन भारत के ग्रंथों का गहन अध्ययन करे तो यह स्पष्ट होता है कि उस समय तमाम वैज्ञानिक पद्धतियाँ और सूत्र उसमें उल्लेखित है। इन ग्रंथों में शब्दो एवं संख्याओं का अपना एक विज्ञान दिखाई पड़ता है जो यह दर्शता है जिनका आज भी मानव जीवन के लिए अत्यन्त उपयोग है। बड़ी से बड़ी संख्या को दो–तीन अक्षरों में कैसे व्यक्त किया जा सकता है। अमूर्त शब्दों एवं संख्याओं के माध्यम से किस प्रकार भाषा एवं भाव को अभिवक्त किया जा सकता है। इसका वर्णन कटपयादि एवं आर्यभट्टीय संख्याओं में दिखाई देता है।

डॉ0 रामानाथन आगे कहा कि प्राचीन भारत के वास्तुकला को देखकर सहज ही उस समय की वैज्ञानिक दृष्टि और प्रयोग की जाने वाले वैज्ञानिक पद्धतियों का अनुमान लगाया जा सकता है। हजारों वर्ष पूर्व अद्भूत कलाकृति से लैस निर्मित मन्दिरों को देखकर भारत की प्राचीन गौरवशाली परम्परा के प्रति सम्मान में स्वयं शिश

पत्रांक : ..... दिनांक : 20.08.2019

झुक जाता है। दिल्ली स्थित महरौली स्तम्भ स्थापत्य कला का एक अनूठा एवं अदितीय उदाहरण है। आज भी भारत में इस प्रकार के सैकड़ों कलाकृतियाँ है जो सदियों बाद भी उसी प्रकार चमचमाती हुई खड़ी है जो निश्चित रूप से प्राचीन भारत की समृद्ध वैज्ञानिक उपलब्धियों की गौरवगाथा कह रही है। वेद विज्ञान के अच्छे भण्डार है। उसमें उतना विज्ञान है जितना आधुनिक विज्ञान ने खोजा है। ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति तथा संचालन के सम्बन्ध ा में आधुनिक विज्ञान में जिन नियमो की व्याख्या की है उसे ऋग्वेद में ऋत् की संज्ञा दी गयी है। वही ज्योतिष के क्षेत्र में भी प्राचीन भारत के ग्रंथ बहुत सम्पन्न है। गणित ज्यामिति का महत्वपूर्ण भाग रहा है। ज्यामितीय ज्ञान के अभाव में हम प्राच्य विद्या के निर्धारित स्वरूप को नहीं समझ सकते। यह इस ओर स्पष्ट संकेत है कि हमारे ऋषि मुनि सरिखे वैज्ञानिक का ज्ञान कितनी उच्च कोटि की थी और वैज्ञानिक थी। भारतीय अंक और संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति का प्रमुख अंग है। वेदांग, ज्योतिष में कालगणना तथा पंचागों के सम्बन्ध में विस्तृत वर्णन मिलता है। पंचाग निर्माण में वाक्य पंचाग की अपनी एक अनूठी विद्या रही है।

व्याख्यान माला में महाविद्यालय के राजनीतिशास्त्र विभाग के प्रवक्ता **डॉ0 कृष्ण कुमार** ने **''वैश्विक स्तर पर उभरता भारत''** विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि भारत विश्व कल्याण और विश्व शांति का सेतु है। भारत के उदय में ही विश्व का उदय और सम्पूर्ण मानवीय मूल्यों का उदय सन्निहित है। भारतीय समाज जीवन में नैतिक मूल्यों की महत्ता के कारण ही आज जहॉ एक और सम्पूर्ण विश्व विभिन्न प्रकार की मंदियों और समस्यों एवं प्रकृतिक व्याधियों से घिरा हुआ है वही भारत वर्तमान वैश्विक परिवेश में भी कुशलता पूर्वक प्रगति के पथ पर अग्रसर है। एक शांतिपूर्ण देश के रूप में भारत की छवि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हमेशा से निखरती रही है। वर्तमान की सरकार ने बेहद सर्तकता के साथ और सशक्त विदेश नीति के माध्यम से विश्वविरादरी में भारत की छटा और भी बिखेरी है। चाहे दक्षिण एशिया के पड़ोसी देश के साथ सम्बन्ध का मामला हो चाहे आशियान , ओपेक, ब्रिक्स देशों के साथ सम्बन्ध हो या फिर दुनिया के महाशक्तियों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय मंचो ं बराबरी का स्थान पाने का विषय हो सभी क्षेत्रों में भारत की साख उत्तरोतर उचाईयों के तरफ बढ़ी है। आज अन्तरिक्ष के क्षेत्र में भारत की शानदार उपलब्धि से हर भारतवासी गर्व से फूले नहीं समा रहा है। दुनिया आज भारत के ज्ञान परम्परा से आच्छादित हो रही है। सम्पूर्ण विश्व की आशा भरी निगाहें विश्व शांति एवं मानव कल्याण की दृष्टि से भारत की ओर टकटकी लगाकर देख रही है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज पर पुष्पांजलि एवं माँ सरस्वती की अराधना के साथ हुआ। समापन वन्देमातरम् से किया गया। आभार ज्ञापन डॉ0 शिव कुमार वर्नवाल एवं संचालन प्रियंका मिश्रा ने किया। इस अवसर पर प्रो0 महेश शरण, डॉ0 वेद प्रकाश पाण्डेय, मनीष कुमार तथा महाविद्यालय के डॉ. अभिषेक सिंह, डॉ0 सुभाष गुप्ता, सुबोध कुमार मिश्र, विरेन्द्र तिवारी, अभिषेक वर्मा, पुष्पा निषाद, यशवंत राव, शैलेन्द्र कुमार सिंह विभा सिंह रमाकान्त दूबे, रचना सिंह, नूपूर शर्मा, अंजलि सिंह सहित सभी शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक : ..... दिनांक : 20.08.2019

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 पर महाविद्यालय में आयोजित हुई संगोष्ठी

20 अगस्त 2019 को महाराणा प्रताप पी0जी0 कालेज, जंगल धूसड़ में ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 : शिक्षक–शिक्षा एवं शिक्षा आयोग के विशेष सन्दर्भ में'' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में परिचर्चा उपरान्त राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 के सन्दर्भ में विचार–विमर्श और मंथन कर ग्यारह सूत्रीय सुझाव प्रस्तुत किये गये–

- अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम को भारत की संस्कृति और संस्कारो से जोड़ा जाय।
- प्रत्येक अध्यापक शिक्षा के संस्थान के साथ एक मॉडल स्कूल भी स्थापित किया जाय।
- शिक्षकों की नियुक्ति हेतु राष्ट्रीय आयोग की स्थापना की जाय।
- अध्यापक शिक्षा में योग्यतम छात्रों को आकर्षित करने हेतु छात्रवृत्ति प्रदान की जाय।
- ज्ञान और कौशल के विकास के साथ ही साथ शिक्षक के चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया जाय।
- शिक्षक–शिक्षा को जीवंत बनायें हेतु कक्षा के वातावरण की सामाजिक और सांस्कृतिक सन्दर्भो के जोड़ा जाय।
- राष्ट्रीय शिक्षा आयोग को दलीय राजनीति से मुक्त किया जाय।
- राष्ट्रीय शिक्षा आयोग में शिक्षकों और शिक्षार्थियों को सत्तर प्रतिशत प्रतिनिधित्व दिया जाय।
- अध्यापक शिक्षा के चार वर्षीय पाठ्यक्रम के साथ ही साथ दो वर्षीय पाठ्यक्रम भी चलाया जाय।
- अध्यापक शिक्षा का नियोजन प्रत्येक पाँच वर्ष के लिए देश की आवश्यकता के अनुरूप किया जाय।
- स्नातक स्तर शिक्षण कार्य में संलग्न शिक्षकों के लिए सेवा पूर्व कार्यक्रम की व्यवस्था की जाय।

परिचर्चा में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में शिक्षाशास्त्र विभाग के **प्रो. एन.पी. भोक्ता, प्रो. शोभा गौड़**, भौतिक शास्त्र विभाग के **प्रो. रविशंकर सिंह**,राजनीतिशास्त्र विभाग के **प्रो. गोपाल प्रसाद**, बी.एच.यू. आई.टी. के **प्रो. बी.रामानाथन,** भटवली महाविद्यालय उनवल के पूर्व प्राचार्य **डॉ. सूर्य पाल सिंह**, किसान पी.जी. कालेज, सेवरही कुशीनगर पूर्व प्राचार्य **डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय,** मगध विश्वविद्यालय गया बिहार के पूर्व आचार्य **डॉ. महेश कुमार शरण,** दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज में बी.एड्. विभाग के **डॉ. राजशरण शाही डॉ. बसन्त नारायण सिंह,** महाविद्यालय के **प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव, श्रीमती शिप्रा सिंह, डॉ. अनुभा श्रीवास्तव, सुश्री श्वेता चोबे, श्री नवनीत सिंह, श्री शैलेन्द्र सिंह, श्री जितेन्द्र प्रजापति, सुश्री दीप्ति गुप्ता, सुश्री रचना सिंह, श्रीमती विभा सिंह, श्रीमती पुष्पा निषाद, श्रीमती साधना सिंह** ने सहभाग किया।

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी